Ayodhya Research Centre and UGC Sponsored
ज्ञान - विज्ञान विमुक्तये

योग्यता

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका

दक्षिण भारत के जीवन, कला व साहित्य में राम का दर्शन

(मूल्य और नैतिकता के सन्दर्भ में)

దక్షిణ భారత జీవనశైలి, కళలు మరియు సాహిత్యంలో రామతత్వం

कार्यकारी संपादक :
डॉ. हरि राम प्रसाद पसुपुलेटी

गौरव संपादक :
डॉ. सि. कृष्ण

L.V.D. COLLEGE RAICHUR

Volume : 6 Special Edition : October - December 2019 ISSN : 2348 - 4225

- Social Sciences • Humanities
- Commerce & Management
- Language and Literature
- Law • Art • Development Studies

Yogyatha

International Referred Research Journal

Editor : Dr. D. Satya Latha

Yogyatha Publications
International Referred

Scanned with OKEN Scanner

विशय सूची

1 दक्षिण भारत के जीवन कला व साहित्य में राम का दर्षन –प्रो. दीनबन्धु पाण्डेय
2 मोल्ल रामायण में प्रतिपादित रामतत्व – प्रो. एस. ए. सूर्य नारायण वर्मा
3 आंध्र प्रदेष राज्य का इतिहास एवं संस्कृति – डॉ. जी. वी. रत्नाकर
4 तेलंगाना इतिहास एवं संस्कृति – डॉ. अविनास जैस्वाल
5 आंध्र के प्रमुख पर्व, धर्म तथा तीर्थ क्षेत्र – डॉ. हरी राम प्रसाद, डॉ. टी. राजषेखर
6 तुलसी कृत रामचरितमानस में श्रीरामचंद्र की युद्धनीति और मैत्री – प्रो. सय्यद मेहरून
7 सनातन भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का अभाव – डॉ. कांबले गौतम, डॉ वि कांचनमाला
8 अवधान साहित्ये रामतत्वविचार – बी. अपर्णा
9 दक्षिण भारत के जीवन, कला व साहित्य में राम का दर्षन डॉ. बी. श्रीनिवसराव
10 संत परंपरा में राम – डॉ. मौलाली
11 राम काव्य परंपरा और मानस में राम तत्व – डॉ. काकानि श्रीकृश्ण
12 दक्षिण की अमूल्य धरोवर मोल्ल रामायण – डॉ. आर. श्रीदेवी
13 दक्षिण की अयोध्या भद्राचलम – डॉ. वि. सरोजिनी
14 तुलसी के काव्य में जीवन दर्सान - डॉ. अरूण हेरेमत
15 तेलुगु भाशा के रंगनाथ रामायण में मानवीयमूल्य - डॉ. गट्ला रमेष बाबु
16 तेलुगु साहित्य में परंपरावादी काव्य के दषा– दिषा - डॉ.टी.साई षंकर
17 तेलुगु भाशा के विष्वनाथ सत्यनारायण रामायण कल्पवक्ष में मानवीयमूल्य–डॉ. षेक सादिक पाशा
18 तेलंगाना राज्य का संस्कषति फूलों का त्यौहार बतुकम्मा डॉ.के. ष्याम सुन्दर
19 तुलसीदास के रामचरितमानस का काव्य–सौष्ठव - डॉ. टी. सुमती
20 तुलसी की समन्वय साधना डॉ.टी. सुनीता
21 आंध्रप्रदेष राज्य का इतिहास एवं संस्कृति – षेक बाजी
22 तेलुगु भाशा के भास्कर रामायण में मानवीयमूल्य – श्री नंदनबोइना वंषीकृश्णा
23 तेलंगाना राज्य का इतिहास एवं संस्कृति – एच मोहन
24 राम नाम संजीवनी – हेमालाता
25 आधुनिक युग में रामकाव्य परंपरा में पं रामचरित उपाध्याय क्रूत रामकथा – सुमन रानी
26 तेलुगु साहित्य में समाज–सुधारवादी कविता साहित्य - आर.उदय भास्कर राव, डॉ साई षंकर
27 रघुवंषमहाकाव्ये रामतत्त्वम – एल.वि.एस.षर्मा
28 गुरूडपुराणे–विद्याव्यवस्था – एल. विष्वरूपाचारी
29 रामायण में नैतिकता एवं मानव मूल्य –सी.एच.स्रवंती, बि लता
30 दक्षिण भारत की संस्कृति –पि.उशा लावण्या
31 मोल्लारामायणम में राम तत्व - डा. बी. लक्ष्मी
32 विष्वनाथ सत्यनारायण कृत रामायण कल्पवक्षम में राम का दर्षन –डॉ.के.अनिता
33 पावन भद्राचल –डॉ स्नेहलता षर्मा
34 कंब–रामायण में नैतिक एवं सामाजिक मूल्य एक विवेचन –डॉ. दंडिभोट्ला नागेष्वर राव

Scanned with OKEN Scanner

तुलसी के काव्य में जीवन दर्सान

'सूर–सूर तुलसी रासि, उडुगन केसावदास' इस उक्ति के अनुसार तुलसी उच्च कोटि के महात्मा थे और सदा रामभजन में लगे रहते थे। तत्कालीन सामाजिक तथा धार्मिक दुर्दसाा को देखकर तुलसीदास के हृदय को मार्मिक व्यथा हुई जान पडती है। वे संस्कष्त साहित्य के अच्छे विद्वान थे। वेद, उपनिषद्, स्मर्षति, दर्सानि, पुराण और काव्यों का उन्होंने अच्छा अध्ययन किया था। देसा और समाज की दुर्दसाा देखकर वे केवल पछताकर नहीं रह जाते थे बल्कि एक कर्मयोगी की तरह उसके सुधार में लग गये और बाहर से नहीं परंतु हृदय के रास्ते उन्होंने समाज में प्रवेसा किया और कविता को उसका एक साधन बनाया। उनके इस प्रयोग का नाम रामचरितमानस है जिसे हम प्राचीन और वर्तमान के बीच की चौड़ी खाई पर सेतु बंह कह सकते हैं।

सुख का संचय और दुःख का अपचय ही प्रत्येक मनुष्य चाहता है और यही उसका लक्ष्य भी है। प्रपंचातीत होना ही सुख और आनंद है तथा प्रपंचलीनता ही दुःख और दुःख का कारण है। इस प्रपंच से बचने की इच्छा के अनुसार क्रिया या कार्य का संपादन होना चाहिए। इच्छित फल–प्राप्ति– हेतु क्रिया या कर्म करने के लिए ज्ञान आवसयक है क्योंकि ज्ञानाभाव में मोहासक्त कर्म हो जाने की आसांका बराबर बनी रहती है और यदि कम्र माकहासक्त हुआ तो फिर वही प्रपंच और मायाजाल घेर लेगा, जो दुःख का कारण है, तब सुखानंद संभव ही नहीं। इसलिए यदि चाहें भी तो पसाु–पक्षी सामान्यतः इस ज्ञान–प्रेरित एवं आनंददायक कर्म का संपादन कर ही नहीं सकते यह तो वहाँ अनिवार्य है, जहाँ कर्म का भाव है। पसाु–पक्षी, कटि–पतंग आदि योनियाँ तो मात्र भोग योनियाँ हैं, कर्म–योनियाँ है ही नहीं। चौरासी लाख जीव–सर्षष्टि में एकमात्र कर्मयोनि मानवयोनि है, शेष तिरासी लाख, निन्नानवे हज़ार नौ सौ निन्नानबे योनियाँ केवल भोग करते हैं। यों मनुष्य बैल से हल या गाड़ी चलाने का काम करवा लेता हे, बंदर या सिंह को नचाकर अर्थाजन कर लेता है तो यह बैल, बंदर या सिंह का काम नहीं है यह तो मनुष्य का काम हुआ। इसलिए मनुष्य की देह सर्वश्रेष्ठ मानी गई है– 'नर तन सम नहिं कवनिउ देही, जीव चराचर जाचत जेही।' क्यों? इसलिए कि यह 'साधन धाम मोच्छ कर द्वारा' है। अतः इसे पाकर जिस मनुष्य ने परमार्थ को नहीं सँवारा, वह मनुष्य और उसका शरीर व्यर्थ है।

मनुष्य अधिक विषयलीन हो, यह तो हो सकता है, पर देवता भी विषयलीन हैं– 'विषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी'। मनुष्य ही नहीं, मुनि और देवता भी विषयासक्त है। अतः विषय–विकार–जनित दुःख से छुटकारा विषयासक्त देवों की उपासना से कब संभव है? देवता भी तो उस परम पुरूष भगवान को भूलकर विषय के वसाीभूत हैं– 'हम देवता परम अधिकारी। विषय बस्य तव भगति बिसारी।' विषय–वासना ही तो माया है तथा माया ही अज्ञान है, अज्ञान ही दुःख का कारण है। तब मनुष्य का देवताओं से अपने परमार्थ–सिद्धि की कामना करना तो अंधे का अंधे को अपना मार्गदर्साक बनाने के समान अनर्थकारी ही होगा। अतः तो मायापति है, विषयोपरि है उसको भजिए और वह है–राम। शरणागत

V.D. College, RAICHUR-03
Scanned with OKEN Scanner

मनुष्य का पालन करने अर्थात् विषय और माया से मुक्ति दिलाकर ज्ञान के प्रकासा–मार्ग पर, ज्योति के जग की आनंदमयी रस–भूमि पर भगवान ही ला सकते हैं। भगवान राम में ही यह सामर्थ्य है। अतः तुलसीदास जी महाराज सलाह देते हैं कि–'भजहुँ प्रनत प्रतिपालक रामहि।'

एकमात्र राम ही पतित–पावन हैं, उन्हें दीन–सुखी प्रिय हैं, वे चुन–चुन कर हठपूर्वक नीचों का उद्धार करते हैं। देवता, दैत्य, मुनि, नाग, नर आदि तो माया के वसा में पड़े स्वयं ही बेचारागी भोग रहे हैं। अतः इनके सामने आत्म–समर्पण करने से क्या होगा? समर्पण करना ही है तो राम के चरणों में कीजिए। इसीलिए तुलसीदास श्रीराम के चरणों को तज अन्यत्र कहीं भी जाने को तैयार नहीं हैं। परमपद चाहने वाले हर किसी को राम का ही भजन करना चाहिए। भ्रमवसा कुछ लोग तुलसी को बहुदेवतावादी मान बैठे हैं जबकि वे स्वार्थी देवताओं की स्तुति राम की ही भक्ति पाने हेतु सहयोग–भाव से करते हैं। वे अपने संपूर्ण शुभचिंतकों, संबंधियों, मित्रों–सभी को रामभक्ति पाने के लिए प्रेरित करते हैं–

यह बिनती रघुबीर गुसाई।

\+ + + +

या जग में जहँ लगि या तनु की प्रीति, प्रतीति, सगाई ते सब

'तुलसीदास' प्रभु ही सों होउ सिमटि इकठाई।।

'मानस' के बालकांड में कथा आई है। कि दुष्ट, लंपट, राक्षसों के अत्याचार से धरती बहुत दुखी होकर धेनुरूप में देवताओं के पास सहायतार्थ गई, अपना संताप सुनाया, पर कुछ काम न आया। तब सुन मुनि, गंधर्व सभी एक साथ ब्रह्मा को पास गये। ब्रह्मा ने अनुमानतः सारी समस्या जान ली और धरती से कहा कि जिस भगवान की तू दासी है वे ही हम लोगों के भी सहायक हैं। अतः धैर्यपूर्वक भगवान के चरणों का स्मरण करो, वे भक्त की पीड़ा समझते हैं, वे ही तुम्हारी विपत्ति दूर करेंगे –

धरनि धरहु मन धीर, कह बिरंचि हरिपद सुमिर।

जानत जन की पीर, प्रभु भजिहि दारून बिपति।।

संपूर्ण देवों के साथ ब्रह्मा जहाँ अपने को असमर्थ मानकर भूमि की निर्भयता हेतु भगवान की स्तुति का परामर्सा देते हैं, वहाँ आज का आदमी देवी–देवताओं के पीछे सर पटक कर भला क्या पायेगा? तय यह हुआ कि सब कुछ छोड़कर एकमात्र भगवान राम ही पूजनीय, भजनीय, वंदनीय और आराधनीय है– 'सब तजि एक भजिए ताहिं।'

'रामचरितमानस' को पढ़कर हमने अपनी ओछी बुद्धि से यही समझा कि देवता तप एवं साधना करने वाले के मार्ग में अकारण बाधा जरूर डाल देते हैं। जो भी भजन–भाव में अग्रसर हुआ उसे भ्रमित करने देवता तुरंत उपस्थित हो गये–महर्षि नारद तक को तो छोड़ नहीं, हम–आप जैसे तुच्छ प्राणियों की तो बात ही अलग है। मानव–सारीर की इंद्रियों के झरोखों में बैठे ये देवता विषय–वायु के प्रवेसा–हेतु द्वार तुरंत खोल देते हैं, ज्ञान, तप, साधन का जलता दीप तब बुझने लगता है–

'इंद्रिय द्वार झरोखा नाना। तहं–तहं सुर बैठे करि थाना।

आवत देखहिं विषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उधारी।।'

शरीर इंद्रियों का समवाय है। इंद्रियाँ और उनके देवता ज्ञान–तप के विसंवादी हैं, विरोधी हैं। इनकी आराधना बाधा–विकार की आराधना है क्योंकि वे स्वयं प्रकासाहीन हैं। इनको प्रकासा देने वाले अवधपति अनादि राम ही हैं– 'सब कर परम प्रकासाक जोई। राम अनादि अवधपति सोई।'

जानकर भी अनजान बने एक मिथ्या शक्ति के पीछे भागते जाने में किसी का दोष नहीं। यह संस्कार दोष है। भूख, प्यास, प्रेम, घृण, झगड़ा, निर्माण आदि की सहज भूख और प्रवृत्ति की भी एक सहज प्रवृत्ति होती है, यह मनोविज्ञानियों की स्थापना है। गाँव–साहर में अपनी यत्किंचित ज्ञान–संपदा के बूते पर, माँ–बाप, ग्राम–नगर देवताओं एवं नान कल्पित रूपों के प्रति स्वयं समर्पित होते हैं, वहीं परम्परा बच्चों को माँ के दूध के समान जन्मजात रूप में, उन्हीं देवी–देवताओं की पूजा उपासना संस्कार रूप में मिल जाती है–बिना जाने मान लेने की यह प्रवृत्ति भी एक प्रकार संस्कार की ही देन है, जो हमारे माँ–बाप करते हैं, जिन्हें पूजते रहे, जिन्हें हम पूजनीय मान लेते हैं। यह विरासत में उपलब्ध रीति है। बालक अपने पुर–परिजन को जिस प्रकार, जिस देवी–देवता की पूजा करते बचपन से देखता है, उसी रीति से उन्हें वह भी पूजने लगता है। बचपन से ही हमारे दिलो दिमाग में उस पूजा–अर्चना की अमिट छाप पड़ जाती है। जो संस्कार शैसावकाल में पड़ जाते हैं, वे छुड़ाए छूटते नहीं–बाग–बगीचे में लगे पीपल, नीम के पेड़ पर उसे देवी–देवता, भूत–पिसााच हमारे पूज्य बन जाते हैं। देवताओं की पूजा तो चलो फिर भी गनीमत है, शव एवं श्मसाान पूजने की कृच्छ रीति क्या कम प्रचलित है? यह सब संस्कार का कमाल है। इसमें संसोधन की आवसयकता है, चिंतन–मनन की जरूरत है। यों किसी पर आस्था रखना बुरी बात नहीं, पर जब आस्थानुसार परिणाम नहीं आए तो लोग ईसवर को या भाग्य को कोसते हैं। ऐसी स्थिति में सोच–समझकर व्यक्त संसार की व्यवहारिकता में सज्जन, लोकमंगलकारी व्यक्ति को तथा उपासना के क्षेत्र में परम समर्थ, सर्वसाक्तिमान भगवान–राम, कृष्ण जो भी हों, पूजनीय हैं।

डॉ. अरूण हेरेमत,

विभाग अध्यक्षा,

एल. वी. डी. कॉलेज,

रायपूर, कर्नाटक राज्य, दूरभाषा :

08277622133

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348 - 4225

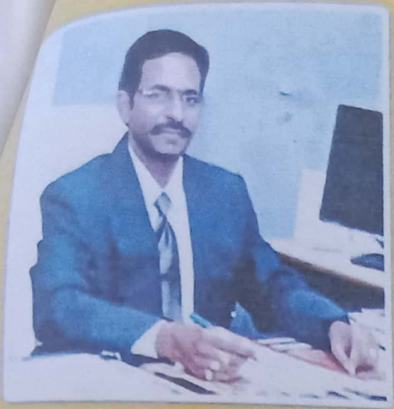

Dr. KRISHNA CHAPPIDI, M.Sc. Tech., N.E.T., P.G.D.C.A., Ph.D.,
Principal
Pithapur Rajah's Government College (A)
KAKINADA - 533 001.

Dr. Krishna, played import rules from 1991 as Senior Lecturer, Reader in the department of Geology. He published more than 50 articles in national and international journals and conferences. He received Best Teacher Award from Department of Higher Education, Government of Andhra Pradesh, State Awards to Meritorious Teachers 2003, "Marlyn & John Zeigler Prize" for applied Geology, Andhra University, Visakhapatnam, "Best Habitation Award" during Janmabhoomi and Micro planning. He has two books under his credit, as course writer for "Environmental Geology, published by Telugu Academy, Hyderabad and Practical manual writer "Structual Geology and Paleontology" published by Dr. B.R.Ambedkar Open University, Hyderabad. He is expert in teaching and learning process by having extra and co-curricular activities like NSS Programme Officer, Janmabhoomi District Resource Person, Dr. B.R. Ambedkar Open University, Directorate of Distance Education - Coordinator, Sumabala Reddy Computer Centre Incharge, UGC Coordinator, NAC Coordinator, IQAC Coordinator, DCEDRC - Member Secretary, Academic Coordinator, Autonomous Coordinator, Life Member Indian Society for Technical Education. Government appointed him as Executive Council Member, Adikavi Nannayya University, Rajamahendravaram, (HIGHER EDUCATION (UE) DEPARTMENT) G.O.MS.No. 14, Dated: 22-02-2016.

Executive Editor
Dr. P. Hari Ram Prasad, M.A., Ph.D.
Head, Dept. of Hindi &
Research Director,
Aadikavi Nannaya University

Dr. P. Hari Ram Prasad has received his bachelor degree (B.Sc.) from Govt. College (Autonomous) Rajahmundry, M.A. Hindi & Ph.D. from Andhra University, Qualified UGC SET Examination in the year - 2012 from Osmania University. He was participated and presented papers National & International Level Seminars and published morethan 20 Research Articles both National & International Magzines. BOS Member and Research Director of Aadikavi Nannaya University, Rajahmahendravaram.

He has published morethan 15 Research articles in both National and International Journals and edited 5 books i.e. 1) Tulanatmaka Sahitya : Hindi our Anya Bhasha Yee, 2) Sahitya, Samaja Tatha Samskruthi Ke Samakaleena Prashna, 3) Hindi-Telugu Sahitya Ke Vividha Vimarsha, 4) Hindi, Telugu Dalitha Atmakadha omka Tulanatmaka Adyayan, 5) Ramacharithamanas me Vaijnanika Drustikoon. And also conducted 5 National and 2 International Seminars successfully. He has been working as incharge, Dept. of Hindi, since 2014, in his able leadership established the PG Department (Hindi) in P.R. Govt. College (Autonomous), Kakinada.

He has received many awards like I.U.F.F. Research Award from Commissioner of Collegiate Education, Govt. of A.P in 2014., Received Rastriya Siksha Ratna Award from M.V.L.A. Trust, Mumbai in 2016, Received Santhabai Memorial Award from Tejaswi Astitwa Foundation, NewDelhi in 2017 and recently received Sarvepalli Radhakrishnan National Best Teacher Award from Philanthropic Society of India. He has expertise in the field of Literature and got many laurels for his contribution in the area of Indian Language and Culture.

Yogyatha International
Research Journal
Subscription Rates in India
Institutions ₹ 1.000.00
Individuals ₹ 1.000.00
All Ohter Countries (Air Mail) : $ 175.00

Yogyatha Publications
Dr. D. Satyalatha
D.No. 39-14-30, Mona Hights, Madhavadhara,
Visakhapatnam - 530 007, A.P. India. Cell : 98859 10709
email : yogyatha_irj@gmail.com, satyalathapalla@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner